दैनिक जागरण
सप्तरंग
अंतस और अध्यात्म का
रविवार, 29 अप्रैल, 2025

जयंती विशेष

प्रश्नोत्तर में जीवन के सनातन मूल्य

सनातन धर्म के आदिगुरु शंकराचार्य ने प्रश्नोत्तररत्नमालिका की रचना की थी, जिसमें 67 श्लोक हैं। हमारे जीवन एवं वैदिक धर्म के सनातन मूल्यों को प्रस्तुत करती इस प्रश्नोत्तरमालिका के उत्तर रूपी सिद्धांत हमें सही पथ दिखाते हैं और हमारा जीवन उन्नत करते हैं। आज शंकराचार्य की जयंती (2 मई) पर प्रस्तुत हैं उनकी इस जीवनोपयोगी आध्यात्मिक कृति से कुछ श्लोक, अर्थ सहित...

आज शंकराचार्य जी के दर्शन, चिंतन करना शुद्ध है, सभी उचित प्रतीत है।

भगवन् किमुपादेयं? गुरुवचनं,
हेयमपि किम्? अकार्यम्।
को गुरुः? अभिमतदः,
शिष्यहितायोद्यतः सततम्॥

हे भगवन्। उपादेय (ग्रहण करने योग्य) क्या है? गुरु का वचन ही उपादेय है। हेय (त्याज्य) क्या है? अकार्य अर्थात अनुचित कार्य। गुरु कौन है? जिसको तत्वज्ञान (सत्य का ज्ञान) हो चुका है तथा जो सदा शिष्य के लिए उद्यत रहता है, वह गुरु है। शिष्य को तत्वज्ञान कराना ही शिष्य का हित है।

त्यजति किं कवयो विदुषां? संसारसरणिखेदः।
किं चोपासनीयं? सत्यज्ञानं शिवाधिष्ठानम्॥

विद्वान को त्रुटि क्या करना चाहिए? जन्म-मरण के चक्र से मुक्ति पाना ही विद्वान का परम कर्तव्य है। मोक्षरूपी वृक्ष का बीज क्या है? अपने आचरण में उतारा गया सम्यक (वास्तविक) ज्ञान ही मोक्षरूपी वृक्ष का बीज है।

कः पन्थाः? धर्मः,
कः शुचिरिह? यस्य मानसं शुद्धम्।
कः पण्डितो? विवेकी, किं विषम्? अकीर्तिरपि पुंसः॥

सर्वश्रेष्ठ पथ्य (उपयोगी) क्या है? धर्म ही सर्वश्रेष्ठ पथ्य है। धर्म का अधिष्ठान सत्य के आचरण से है। यहां कौन पवित्र है? जिसका मानस शुद्ध है। कौन पंडित (ज्ञानी) है? जो विवेकवान है। विष क्या है? पुण्यजनों (श्रेष्ठजनों) का तिरस्कार ही विष है।

किं संसारे सारः? बहुशोऽपि विचिन्त्यमानमिदम्।
किं मनुजेप्सितलाभः? स्वपरहितायोद्यतं जन्म॥

संसार में सार (वास्तविक तत्व) क्या है? यही वह तत्व है, जिसका हम बार-बार चिंतन करते हैं (परंतु निष्कर्ष नहीं मिल पाता)। मनुष्यों के लिए इष्टतम क्या है? अपने और दूसरे के हित के लिए समर्पित जन्म प्राप्त करना।

मदिरेव मोहजनकः कः? स्नेहः,
के च दस्यवः? विषयाः। का भवतली? तृष्णा
को वैरी? वाल्लभ्योगः॥

मदिरा के समान मोहजनक क्या है? स्नेह (लगाव)। दस्यु (डाकू) कौन हैं? सांसारिक विषय (इंद्रियों की तृप्ति के साधन)। बार-बार जन्म को लाता कौन है? सांसारिक विषयों की तृष्णा। शत्रु कौन है? जो अनुद्योग (निष्कर्म) हैं, वही शत्रु हैं।

कमलाद भयमिह? मरणात्,
अपहृति को विचिन्त्यते? यमी।
कः शूरः? यः स्मर-लोभन-क्रोधान् व्यथितः॥

इस संसार में भय किससे है? मृत्यु से। संसार में सबसे बड़ा अंधा कौन है? रागी (विषयों में आसक्त)। शूरवीर कौन है? जो सुंदरियों के चंचल नेत्रों के बाणों से घायल नहीं होता।

किं जीवितम्? अनवद्यम्,
किं जाड्यं? पठितस्यानभ्यासः।
को जागर्ति? विवेकी, का निद्रा? मूढता जंतोः।

जीवन क्या है? निर्मलता, निष्कलंकता ही जीवन है। जड़ता क्या है? अध्ययन किए गए पाठ का अभ्यास न करना। कौन जागता है? विवेकवान (जिसे यथार्थ और अयथार्थ की पहचान है)। निद्रा क्या है? लोगों की मूढ़ता।

नलिनी-दल-गत-जलवत्तरलं किं? यौवनं धनं चायुः।
कथय पुनः के शीतलाः किरणवन्तः? सज्जना एव॥

कमलिनी के पत्ते में पड़े जल की तरह तरल (अस्थायी) क्या है? यौवन, धन और आयु। चंद्रमा की किरणों के समान शीतल कौन होते हैं? सज्जन पुरुष।

को नरकः? परवशता
किं सौख्यं? सर्वसंगविनिर्मुक्तिः।
किं सत्यं? भूतहितं
किं च किं? प्राणिनामसत्यं॥

नरक क्या है? दूसरे के अधिकार में रहना। सौख्य क्या है? सभी संगतियों से वैराग्य, किसी की आवश्यकता न होना। सत्य (हमारे द्वारा किए जाने योग्य) क्या है? समस्त प्राणियों का कल्याण। प्राणियों को सबसे प्रिय क्या होता है? प्राण ही प्राणियों को सर्वाधिक प्रिय होते हैं।

कोऽनर्थकरो? मानः, को सुखदः? सद्भक्तसंगतिः।
सर्वव्यसनविनाशी को दक्षः? सर्वदा त्यागी॥

अनुचित फल देने वाला कौन है? मान (अहंकार)। कौन सदा सुखद होती है? सज्जनों की मैत्री। समस्त व्यसनों को नष्ट करने में कौन समर्थ होता है? जो सर्वदा त्यागी होता है।

किं कार्यं? भूतहितं, किं जन्यं? यदवसरे दानम्।
आजन्मतः किं सत्यं? प्रयत्नतः पालनं चास्य॥

मरण क्या है? मूर्खता। सबसे बहुमूल्य क्या है? जो अवसर में प्राप्त हो जाए। मृत्युपर्यंत कौन पीड़ित कराता है? छिपाकर किया गया पाप।

कुत्र विधेयो यत्नो? विद्याभ्यासे सदौषधे दाने।
अवधीरणा च कार्या? खल परयोषित परद्रव्ये॥

हमें कहां प्रयास करना चाहिए? विद्या के अभ्यास में, सदौषधि के सेवन में तथा दान में सदा प्रयास करना चाहिए। किसकी इच्छा नहीं करनी चाहिए? दूसरे की स्त्री तथा दूसरे के धन की।

कः साधुः? साधुः, कल्याणमयश्चरते? साधुतमः।
केन जितं जगदेतत्? सत्यतितिक्षाव्रतः पुंसा॥

साधु कौन है? वह सज्जन पुरुष, जो समाज के उत्थान के लिए अच्छा कार्य करे। अधम किसे कहते हैं? जो विरुद्ध आचरण कर समाज को गिराता है। इस संसार को किसने जीता? सत्यनिष्ठ और स्थायी पुरुष ने।

कमद यतो वाणिनाम्? सत्यप्रियभाषिणो विवेकस्य।
क्व स्थातव्यं? न्यायपथे चेत् दृष्टादृष्टलाभाढ्ये॥

वह प्राणियों का समूह किसके वश में है? सत्य और प्रिय बोलने वाले विनयशील पुरुष के। कहां पर स्थित होना चाहिए? जहां हम अनेक प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष लाभ पा सकें।

को अंधो? योऽकार्यरतः,
को बधिरो? यो हितानि न शृणोति।
को मूकः? यः काले प्रियाणि वक्तुं न जानाति॥

कौन अंधा है? जो अनाचारी है। कौन बहरा है? जो अपने हित को नहीं सुनता। कौन गूंगा है? जो समय पर प्रिय बोलना नहीं जानता।

किं दानम्? अनाकांक्षम्
किं मित्रं? यो निवारयति पापात्।
कोऽलंकारः? शीलः। किं काव्यं मधुरं? सत्यम्॥

दान क्या है? जो बिना आकांक्षा के प्राप्त हो। मित्र कौन है? जो पाप से दूर रखे। आभूषण क्या है? शील। वाणी का आभूषण क्या है? सत्य।

किं संसारे मनुजैः? विद्या वित्तं यशः पुण्यम्।
कः सर्वगुणविनाशी? लोभः, शत्रुश्च कः? कामः॥

मनुष्यों को क्या प्राप्त करना चाहिए? विद्या, धन, बल, यश और पुण्य। कौन समस्त गुणों को नष्ट कर देता है? लोभ। कौन सबसे बड़ा शत्रु है? काम सबसे बड़ा शत्रु है।

सर्वसुखानां बीजं किं? पुण्यं, दुःखानि कुतः? पापात्।
कमलेक्षणं? यः किल शंकरमाराधयेद् भक्त्या॥

समस्त सुखों का बीज क्या है? पुण्य ही समस्त सुखों का बीज है। दुख किससे प्राप्त होता है? पाप से। ऐश्वर्य किसे प्राप्त होता है? जो भक्ति से भगवान शंकर की आराधना करता है।

को वंद्यो? विनीतः, को वा हीनः? यो दृप्तः।
को न श्लाघ्यो? हृदि वाचाकूपं चरतः॥

हमेशा कौन उन्नति करता है? विनयशील। कौन हमेशा अवनति को प्राप्त करता है? जो अहंकारी होता है। किस पर विश्वास नहीं करना चाहिए? जो हमेशा झूठ बोलता है।

[संकलित, आदिगुरु शंकराचार्य के ग्रंथों से साभार]